Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=218
Peer Reviewed, Refereed & Indexed Journal, JULY-AUG, 2023, Vol- 12/78
https://doi.org/10.5281/zenodo.8367023

अध्येताओं के स्मृति स्तर को प्रभावित करने वाले मनो–सामाजिक दशाओं के शोध विधि एवं प्रक्रिया का“अध्ययन”

सरोज शोधार्त्री (शिक्षा) ओ.पी.जे.एस.विश्वविधालय,चुरु

डॉ सुमन शर्मा (शोध–निर्देशक) सहायक आचार्य (शिक्षा) ओ.पी.जे.एस.विश्वविधालय,चुरु

Paper Received On: 25 AUG 2023

Peer Reviewed On: 28 AUG 2023

Published On: 01 SEPT 2023

प्रस्तावना: अनुसंधान वह शक्ति है जिससे हम धीरता के साथ निर्णयों को स्थापित करते है सुखो का मनन सर्तकता से सहमति तत्परता से भूल सुधार और सावधान व कष्ट के साथ विचारो की व्यवस्था करते है । किसी साध्य को प्राप्त करने के लिए साधन की आवश्यकता होती है। साधन की पवित्रता व स्पष्टता साध्य को सुगम व स्पष्ट बना देती है।

अनुसंधान में भी अनुसंधानकत्री अपनी चयनित समस्या से सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास करता है लेकिन उसको इन प्रश्नो का उत्तर यों ही नही मिल जाता है । वरन उसे अनुसंधान से सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए एक लम्बी प्रक्रिया से गुजराना पडता है। एक सोची समझी योजना तैयार करनी पडती है। जो कई चरणो में पुर्ण होती है जिसके कई सोपान होते है जैसे अनुसंधान कार्य को पूर्ण करने के लिए कौन सी विधि तथा समस्या के लिए चयनित चर से सम्बन्धित दत्त संग्रहण हेतु कौनसी विधि अपनाई जायेगी। दत्त संग्रहण हेतु किस उपकरण की सहायता ली जायेगी, किस क्षेत्र से दत्त संग्रहण कार्य किया जायेगा, सम्मिलित दत्तों से परिणात प्राप्त करने हेतु उपयुक्त सांख्यिकी कौन–कौनसी होगी, आदि समस्त प्रश्न ऐसे हैं जो अनुसंधानकत्री द्वारा बनाई गई शोध योजना के द्वारा ही हल हो सकते है। इन प्रश्नो का उत्तर प्राप्त करने हेतु अनुसंधानकत्री जो अनुसंधान योजना बनाता है सामान्य शब्दो में उसे ही शोध प्रारूप कहा जाता है। अनुसंधान कार्य के

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समय शोधकत्री को किसी भी कठिनाई का सामना न करना पडे इसके लिए प्रारम्भ से ही अनुसंधानकत्री एक अनुसंधान प्रारूप तैयार करके अपना कार्य आरम्भ करती है।

शोध विधिः शोधकार्य एक ऐसा व्यवस्थित तथा नियंत्रित अध्ययन है, जिसके अन्तर्गत संबंधित चरों व घटनाओ के पारस्परिक संबंधों का अन्वेषण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकी एवं वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है तथा प्राप्त परिणामों से वैज्ञानिक निष्कर्षों, नियमों तथा सिद्धान्तों की रचना, खोज व पुष्टि की जाती है । अनुसंधान की श्रेष्ठता विधि पर निर्भर करती है। विधि अनुसंधान प्रक्रिया को परिचालित करने का एक तरीका है जो समस्या की प्रकृति द्वारा निर्धारित है। शोधकार्य एक विशष महत्व का उत्तरदायित्वपूर्ण सत्य कार्य है
और अगर इस उत्तरदायित्व को पूर्ण करने में पैज्ञानिक व उपयुक्त विधि का प्रयोग नही किया जाये तो यह कार्य कभी पूर्ण नही हो सकता है।
प्रस्तुत शोध में विषय की समस्या को भली प्रकार समझकर, सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला गया कि शोध समस्या के मुख्य उद्देश्य अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि से अधिक सम्बन्धित हैं। अतः शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधकत्री दृवारा प्रस्तुत अनुसंधान में ऑकडों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
पार्टन के शब्दों में – किसी सर्वेक्षण की योजना संगठन तथा संचालन किसी व्यापार को चलाने के समान है। दोनो के लिए विशेष लगन, चतुराई, प्रबन्ध की योजना, विशेष अनुभव तथा इसी प्रकार के काम का प्रशिक्षण आवश्यक है। प्रारम्भ से अन्त तक सावधानी के साथ योजना बनाने पर ही उससे प्राप्त निष्कर्षो पर विश्वास किया जा सकता है और ऐसी दशा में ही निष्कर्ष प्रकाशन के योग्य स्थिति तक पहुॅच सकते हैं।
सर्वेक्षणात्मक पद्धति ज्ञान के विकास में सहायक होती है। यह किसी व्यक्ति के कार्य की प्रगति के लिए तीक्ष्ण दृष्टि प्रदान करती है। अतः इस पद्धति की विशेषताओ को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शोधकार्य सम्पन्न किया गया है।

3.3 सर्वेक्षण विधि का अर्थ

सर्वेक्षण विधि वह प्रणाली है जिसमें अनुसंधानमकत्री नियंत्रित नहीं होती है। वरन् वह स्वतंत्र रूप से विचरण करती है। इसके माध्यम से शोधकत्री लोगो के जीवन क्रियाओ, प्रतिक्रियाओ का स्वच्छन्द मन से आध्ययन करती है। वस्तुतः सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किसी क्षेत्र के बारे मे निश्चित जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाती है। सर्वेक्षण उपागम उन समकों को एकत्रित करने व विश्लेषण करने की विधि है जो बहुत से ऐसे उत्तर देने वालों के द्वारा संकलित किया जाता है जो ऐ सुनिश्चित जनसंख्या के प्रतिनिधि है।
मूल रूप से सर्वेक्षण पद्धति का सम्बन्ध वर्तमान परिस्थितियों के प्रचतिल व्यवहारों, विश्वासो, दृष्टिकोणों या अभिवृत्तियों जो कि स्थापित है, प्रवृत्तियों को, जो विकसित हो रही है, प्रक्रियाओं को जो गतिशील है, प्रभाव जो कि अनुभव किये जा रहे हैं, से होते है, किन्तु

परिस्थितियोवश जब किसी बडी आबादी की समस्त इकाईयों का सर्वेक्षण नहीं हो पाता और केवल एक उपयुक्त न्यादर्श का सर्वेक्षण किया जाता है तो एक न्यादश्र के अध्ययन से जो निष्कर्ष प्राप्त होते हैं उनका सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए सामान्यीकरण किया जाता है उक्त प्रतिदर्श के अध्ययन को सर्वेक्षण विधि कहते हैं।

वर्ल्ड डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी के अनुसार – एकसमुदाय के सम्पूर्ण जीवन या उसके किसी एक पहल् के सम्बन्ध में व्यवस्थित और सम्पूर्ण तथ्यों के साथ विश्लेषण करना ही सर्वेक्षण कहलाता है

करलिंगर के अनसार – सर्वेक्षण अनुसंधान सामाजिक वैज्ञानिक अन्वेषण की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत व्यापक तथा कम आकार वाली जनसंख्याओं का अध्ययन, उनमें से चयनित प्रतियों के आधार पर इस आशय से किया जाता है ताकि उनमें व्याप्त सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक घरों के घटनाक्रमों, वितरणों तथा पारस्परिक अन्तः सम्बन्धों का ज्ञान उपलब्ध हो सके।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि सर्वेक्षण का क्षेत्र व्यापक है। वर्तमान में क्या स्वरूप है, इनकी व्याक्ष्या व विवेचना करता है। सामान्य सर्वेक्षण की परिस्थितियों अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है। अभ्यास जो चालु है, प्रक्रियाएँ जो चल रही है, अनुभव जो किये जा रहे है अथवा नवीन दिशाएं जो विकसित हो रही हैं। उन्हीं से इनका सम्बन्ध है।

यह पद्धति ज्ञान के विकास में सहासक होती है। यह किसी व्यक्ति के कार्य की प्रगति के लिए तीक्ष्ण दृष्टि प्रदान करती है। अतः इस पद्धति की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शोधकार्य सम्पन्न किया गया है।

3.4 न्यादर्श का प्रारूप एवं विधि :–

अनुसंधान में न्यादर्श का उतना ही महत्व है जितना कि मानव शरीर में हदय का। न्यादर्श किसी भी अनुसंधान कार्य की आधारशिला माना जाता है। न्यादर्श जितना द्दढ होगा अनुसंधान के परिणाम उतने परिशुद्ध एवं विश्वसनीय होंगे। न्यादर्श को तभी उपयुक्त माना जा सकता है। जब वह सम्पूर्ण समष्टि का सही प्रतिनिधित्व करे। सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना कठिन होता है तथा कभी–कभी असम्भव भी होता है। न्यादर्श प्रविधि शोधकार्य को व्यावहारिक तथा समय, धन एवं शक्ति की द्दष्टि से मितव्ययी बना देती है।

इस प्रकार शोधकार्य हेतु जिस क्षेत्र विशेष को शोधकर्ता द्वारा चुना जाता है उस सम्पूर्ण क्षेत्र का अध्ययन व उससे सम्बन्धित दत्त संकलित करना उसके लिए सम्भव नही होता है क्योंकि सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र बहुत बडा होता है और सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्धित आंकडे एकत्र करना धन, समय एवं श्रम की द्दष्टि से आसान नहीं होता है।

इस प्रकार न्यादर्श एक सम्पूर्ण जनसंख्या का वह अंग है जिसमें समग्री की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिबिम्ब रहता है। अनुसंधान का महत्वपूर्ण आधार जनंसख्या होती हैं। चूंकि सम्पूर्ण जनसंख्या पर अध्ययन करना कठिन होता है। इसलिए जनसंख्या में से कुछ प्रतिनिधि न्यादर्श

का चुनाव कर लिया जाता है क्योंकि न्यादर्श के बिना अनुसंधान कार्य सम्भव नही हो पाता है। शोधकार्य की सफलता हेतु इस प्रतिनिधि न्यादर्श से गंछित सुचनाएँ प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरणों जैसे – प्रश्नावाली, अनुसची, अभिवृत्ति मापनी, साक्षात्कार व स्वनिर्मित मापनी आदि उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।

वास्वत में पूरी जनसंख्या पर अध्ययन न करके केवल उसके प्रतिनिधि न्यादर्श पर अध्ययन करने से अनेक लाभ होते है जैसे – न्यादर्श पर अध्ययन करने से समय, श्रम व धन की बचल होती है। न्यादर्श में इकाईयों कम रहती है। अतः गहन रूप से निरीक्षण किया जा सकता हैं। इस प्रकार असम्भाव्यता सिद्धान्त के आधार पर उपलब्ध परिणमों की विश्सनीयता स्तर को सरलता से प्राप्त किया जा सकता है।

अतः शोधकत्री उस सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में से एक ऐसे अंश का अध्ययन हेतु चुनाव करता है जो सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र की समस्त विशेषताओ का स्पष्ट प्रतिविम्ब होता है। सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र की समस्त विशेषताओं से युक्त इसी अंश को सामान्यतया न्यादर्श का नाम दे दिया जाता है।

न्यादर्श को अपने शब्दों में स्पष्ट करते हुए पी. वी. यंग ने कहा है कि एक प्रतिदर्श अपने समस्त समूह का एक लघु चित्र होता है इसी सन्दर्भ में गुडस एवं हॉट ने कहा है कि – न्यादर्श एक विस्तृत समूह का प्रतिनिधि होता है

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि न्यादर्श समस्त इकाई समूह में से चुनी गई ऐसी इकाई का समूह है जो समस्त इकाई समूह का प्रतिनिधित्व करता है।

3.5 न्यादर्श चयन विधिः शोध अध्ययन में स्वविवेक तथा याद्दच्छिक न्यादर्श विधि के अन्तर्गत लॉटरी विधि का प्रयोग किया गया।

1. राज्य का चयन :– शोधकत्री ने राज्य के चयन हेतु स्ववियेक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया है क्योंकि शोधकत्री राजस्थान राज्य की निवासी है। अतः शोध का क्षेत्र राजस्थान राज्य को चयनित करना उचित समझा।

2. संभाग का चयनः– शोधकत्री ने संभाग के चयन हेतु स्वविवेक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया है क्योंकि शोधकवीं बीकानेर संभाग की निवासी है। अतः शोध का क्षेत्र राजस्थान राज्य के बीकानेर संभाग को चयनित करना उचित समझा।

3. जिले का चयन :– शोधकत्री द्वारा जिले के चयन हेतु याद्दच्छिक विधि के अन्तर्गत लॉटरी विधि को अपनाया गया जिसके आधार पर बीकानेर संभाग के हनुमानगढ, श्री गंगानगर व चुरू जिले को सम्मिलित किया गया है।

4. विद्यालयों को चयन :– प्रस्तुत शोध में शोधकत्री द्वारा याद्दच्छिक विधि द्वारा उच्च प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।

5. अध्येताओं का चयन :– शोधकत्री द्वारा 400 छात्र एवं 400 छात्राओं को न्यादश्र में शामिल किया गया है।

3.6 चयनित न्यादर्श : प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान राज्य के चुरू जिले के 400 उच्च प्राथमिक स्तर के अध्येताओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया। शोधकत्री ने प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में अध्येताओं का चयन निम्मप्रकार से किया है –

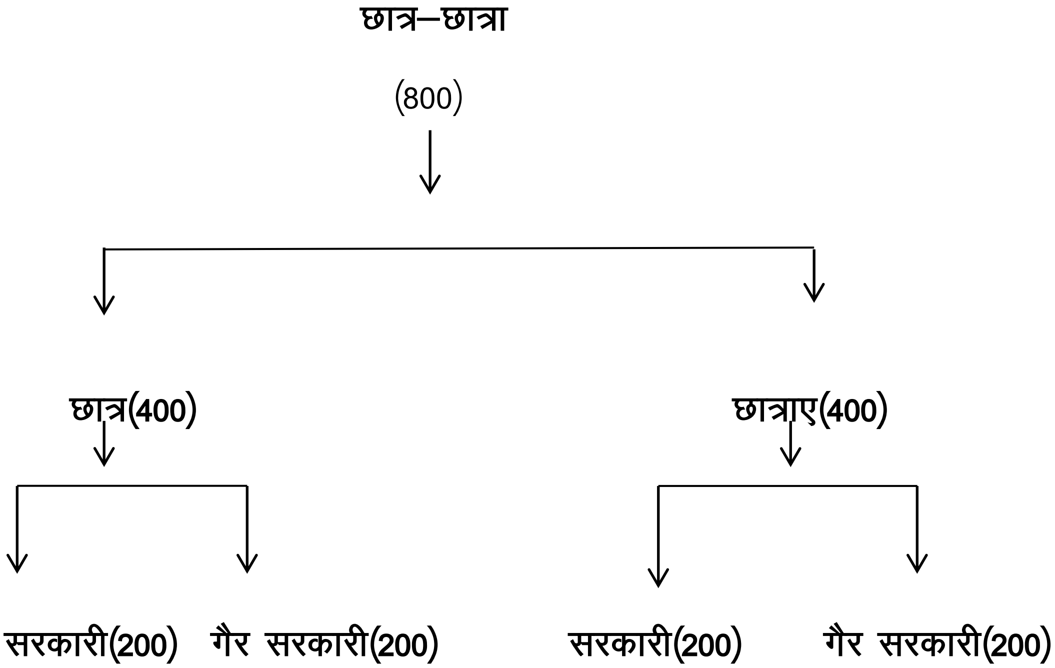

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

अस्थाना, विपिन (1994) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा –2

अग्रवाल, ईश्वर प्रकाश एवं अनिता, (1995): ''बाल विकास एवं शैक्षिक क्रियाएँ'' आर्य बुक डिपो करोल बाग, नई दिल्ली,

अटल बिहारी वाजपेयी (2000) : 'विचार बिन्दु' किताब घर नई दिल्ली

अरोड़ा, रीता एवं मारवाह, सूरेश (2001) : ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी के आधार'' 23 चौड़ा रास्ता, जयपुर।

कपिल एच. के.(2004) : ''अनुसंधान विधियाँ, एच. पी. भार्गव बुक हाऊस, 4/230, कचहरी घाट, आगरा।

कुमार अंनन्त (2006) : ''भारतीय शिक्षा का प्रशासनिक स्वरूप''चन्द्रविला प्रकाशन, नई दिल्ली।

गुप्त, नत्थूलाल (2000) : मूल्य परक शिक्षा और समाज' नमन प्रकाशन, नई दिल्ली ।

गुप्ता, एम.एल. एवं शर्मा डी.डी. (1997) : ''भारतीय समाज'' साहित्य भवन पब्लिकेशसन्स।

Cite Your Article as:

Saroj, & Suman Sharma. (2023). Adhyataon ke Smurti Star ko Prabhavit Karnewale Mano Samajik Dashaonke Shodh vidhi eva Prakriya ka Adhyan. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 12(78), 723–728. https://doi.org/10.5281/zenodo.8367023